लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-102

जलन्धरवधमहाकाव्यम्

प्रधानसम्पादकः
प्रो. परमेश्वरनारायण शास्त्री
कुलपतिः

प्रणेता
डा. रामविलास चौधरी
साहित्यवेदान्तधर्मशास्त्राचार्यः
साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.,
एल.एल.बी., विद्यावारिधि (पी-एच.डी.)
लब्धानेकस्वर्णपदकः
पूर्वसंस्कृतविभागाध्यक्षः
पटनाविश्वविद्यालयः

हिन्दीटीकाकर्त्री
डा. ध्रुव कुमारी चौधरी
साहित्याचार्य, एम.ए. द्वय (संस्कृत-हिन्दी)
एम.एड. पी-एच.डी.
(पटना विश्वविद्यालय)

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्
(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्ययानपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्ययायितः मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-102

जलन्धरवधमहाकाव्यम्

प्रणेता

डा. रामविलास चौधरी

साहित्यवेदान्तधर्मशास्त्राचार्यः
साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.,
एल.एल.बी., विद्यावारिधि (पी-एच.डी.)
लब्धानेकस्वर्णपदकः
पूर्वसंस्कृतविभागाध्यक्षः
पटनाविश्वविद्यालयः

हिन्दीटीकाकर्त्री

डा. ध्रुव कुमारी चौधरी

साहित्याचार्य, एम.ए. द्वय (संस्कृत-हिन्दी)
एम.एड. पी-एच.डी.
(पटना विश्वविद्यालय)

पहले मन में अच्छी भावना (सकारात्मक भाव) धारण करनी चाहिए तत्पश्चात् धैर्य रखते हुए निश्चयपूर्वक उसकी पूर्ति के लिए समझदार व्यक्ति को अपेक्षित पूरा प्रयत्न करना चाहिए।।25।।

उसके बाद मन में विश्वासपूर्वक दृढ भाव से सम्पूर्ण विश्व का भरण-पोषण करने वाले प्रभु की प्रार्थना हमेशा करनी चाहिए। इस प्रकार से कोई अभीष्ट परिणाम असाध्य नहीं है।।26।।

जब तक मनोऽनुकूल फल प्राप्त न हो जाय मनुष्य को उचित समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। गौरी बहुत दिनों तक तपस्या में लगी रही तब वर रूप में महादेव को पाकर प्रसन्न हो गई।।27।।

विधाता का लेख झूठ नहीं होता- यह बात लोक-प्रसिद्ध है, किन्तु प्रसन्न होने पर शंकर ललाट की रेखा को भी बदल देने में समर्थ हैं।।28।।

एकनिष्ठ भाव से पूजित होने पर वे आशुतोष (शीघ्र प्रसन्न होने वाले शिव) भक्तों को महान् अभीष्ट फल अवश्य ही देते हैं। कलियुग में उनकी महिमा अपरम्पार है।।29।।

इस प्रकार चिन्तन कर महान् कवियों ने अनेक काव्यों की रचना कर शंकर की प्रसन्नता और विमल कीर्ति प्राप्त की। पृथ्वी पर उन (शिव) से भिन्न कोई पूज्यतम (अभिलषणीय) देव या मानव प्राप्त करने योग्य नहीं है।।30।।

कवित्व के मूल बीज (प्रतिभा) के बिना जो व्यक्ति काव्य-रचना करने का हठ करता है वह निश्चय ही मूढबुद्धि है जो पैर के बिना ही हिमालय की चोटी पर चढ़ने को उत्सुक है।।31।।

शास्त्र के प्रौढ ज्ञान से रहित और फिर काव्य के रसों से अनभिज्ञ अपनी प्रतिभा को मैं जानता हूँ तथापि शंकर की भक्ति पाने के लिए (अपने) भाव के अनुरूप कुछ कविता रचना करता हूँ।।32।।

विद्वान् व्यक्ति इस रचना में काव्य-गुणों का किसी रूप में अवलोकन कर आनन्द अनुभव करते हैं, तो यह (कृति) काव्य है; अन्यथा शिवजी के गुणगान में रमाविलास का रचना-विलास (मनोविनोद) ही सही।।33।।

प्रो. रामविलास चौधरी

माता-पिता- स्व. रामेश्वरी देवी एवं स्व. शीतल चौधरी

पत्नी- डा. कुमारी ध्रुव चौधरी

जन्मस्थान- ग्राम गोनुचक, थाना- बछबारा, जिला बेगूसराय

भाषाज्ञान- हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, अंग्रेजी

जन्मतिथि- बारह सितम्बर एक हजार नौ सौ सैंतालीस (12-09-1947)

अध्ययन- साहित्य-वेदान्त-धर्मशास्त्राचार्य, एम.ए., संस्कृत लब्धस्वर्णपदक, एल.एल.बी., विद्यावारिधि (पी-एच.डी.)

अध्यापन संस्था- पटना विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग, आचार्य एवं अध्यक्ष। बिहार नेशनल कालेज (पटना विश्वविद्यालय) में जनवरी 1976 से जून 2005 तक तथा स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग में अध्यक्ष (जुलाई 2005 से सितम्बर 2009 तक)

प्रकाशित रचनाएँ- मौलिक- सिद्धान्त कौमुदी के स्त्री-प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय, आत्मनेपद, परस्मैपद तथा पूर्वकृदन्त की व्याख्या। संस्कृतज्ञाननिधि (संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद), अद्‌भुत पाणिग्रहणनाटकम्, संस्कृत साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास, वैदिक साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास।

सम्पादित- सिद्धान्तकौमुदी कारकप्रकरणम्, संस्कृतपीयूषम्।

अनूदित- अर्चना (संस्कृत विद्वानों का जीवन-चरित) का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद, तथा पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा हिन्दी में रचित जगद्‌गुरु शंकराचार्य का संस्कृत में अनुवाद।

अप्रकाशित- संस्कृत-निबन्ध-कुसुमाञ्जलि।

वर्तमान निवास- ए, 129 हाउसिंग कालोनी, कंकड़बाग, पटना 800020

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्ययानपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्ययायितः मानितविश्वविद्यालयः)

56-57, इन्स्टीटयूशनल एरिया, जनकपुरी, नवदेहली- 110058

दूरभाष : 011-28524993, 28521994, 28520977